Ram Chalisa in Hindi

॥ चौपाई ॥

श्री रघुबीर भक्त हितकारी । सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ॥ 1 |
निशि दिनि ध्यान धरै जो कोई । ता सम भक्त और नहीं होई ॥ 2 |
ध्यान धरें शविजी मन मांही । ब्रहमा, इन्द्र पार नहीं पाहीं ॥ 3 |
दूत तुम्हार वीर हनुमाना । जासु प्रभाव तहिं पुर जाना ॥ 4 |
जय, जय, जय रघुनाथ कृपाला । सदा करो संतन प्रतपिाला ॥ 5 |
तुव भुजदण्ड प्रचण्ड कृपाला । रावण मारि सुरन प्रतपिाला ॥ 6 |
तुम अनाथ के नाथ गोसाईं । दीनन के हो सदा सहाई ॥ 7 |
ब्रहमादकि तव पार न पावैं । सदा ईश तुम्हरो यश गावैं ॥ 8 |
चारउि भेद भरत हैं साखी । तुम भक्तन की लज्जा राखी ॥ 9 |
गुण गावत शारद मन माहीं । सुरपति ताको पार न पाहि ॥ 10 |
नाम तुम्हार लेत जो कोई । ता सम धन्य और नहीं होई ॥ 11 |
राम नाम है अपरम्पारा । चारहु वेदन जाहि पुकारा ॥ 12 |
गणपति नाम तुम्हारो लीन्हो । तनिको प्रथम पूज्य तुम कीन्हो ॥ 13 |
शेष रटत नति नाम तुम्हारा । महि को भार शीश पर धारा ॥ 14 |
फूल समान रहत सो भारा । पावत कोऊ न तुम्हरो पारा ॥ 15 |
भरत नाम तुम्हरो उर धारो । तासों कबहूं न रण में हारो ॥ 16 |
नाम शत्रुहन हृदय प्रकाशा । सुमरित होत शत्रु कर नाशा ॥ 17 |
लखन तुम्हारे आज्ञाकारी । सदा करत सन्तन रखवारी ॥ 18 |
ताते रण जीते नहि कोई । युद्ध जुरे यमहूं कनि होई ॥ 19 |
महालक्ष्मी धर अवतारा । सब वधि करत पाप को छारा ॥ 20 |
सीता राम पुनीता गायो । भुवनेश्वरी प्रभाव दखियो ॥ 21 |
घट सों प्रकट भई सो आई । जाको देखत चन्द्र लजाई ॥ 22 |
जो तुम्हरे नति पांव पलोटत । नवो नदि्धि चरणन में लोटत ॥ 23 |
सदि्धि अठारह मंगलकारी । सो तुम पर जावै बलहिारी ॥ 24 |
औरहु जो अनेक प्रभुताई । सो सीतापति तुमहि बनाई ॥ 25 |
इच्छा ते कोटनि संसारा । रचत न लागत पल की बारा ॥ 26 |
जो तुम्हरे चरणन चति लावै । ताकी मुक्ति अवसि हो जावै ॥ 27 |
सुनहु राम तुम तात हमारे । तुमहि भरत कुल पूज्य प्रचारे ॥ 28 |
तुमहि देव कुल देव हमारे । तुम गुरु देव प्राण के प्यारे ॥ 29 |
जो कुछ हो सो तुमहि राजा । जय जय जय प्रभु राखो लाजा ॥ 30 |
राम आत्मा पोषण हारे । जय जय जय दशरथ के प्यारे ॥ 31 |
जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरुपा । नर्गुण ब्रहृ अखण्ड अनूपा ॥ 32 |
सत्य सत्य जय सत्यव्रत स्वामी । सत्य सनातन अन्तर्यामी ॥ 33 |
सत्य भजन तुम्हरो जो गावै । सो नश्चिय चारों फल पावै ॥ 34 |
सत्य शपथ गौरीपति कीन्हीं । तुमने भक्तहि सब सधि दीन्हीं ॥ 35 |
ज्ञान हृदय दो ज्ञान स्वरुपा । नमो नमो जय जगपति भूपा ॥ 36 |
धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा । नाम तुम्हार हरत संतापा ॥ 37 |
सत्य शुद्ध देवन मुख गाया । बजी दुन्दुभी शंख बजाया ॥ 38 |
सत्य सत्य तुम सत्य सनातन । तुम ही हो हमरे तन-मन धन ॥ 39 |
याको पाठ करे जो कोई । ज्ञान प्रकट ताके उर होई ॥ 40 |
आवागमन मटै तहि केरा । सत्य वचन माने शवि मेरा ॥ 41 |
और आस मन में जो होई । मनवांछति फल पावे सोई ॥ 42 |
तीनहुं काल ध्यान जो ल्यावै । तुलसी दल अरु फूल चढ़ावै ॥ 43 |
साग पत्र सो भोग लगावै । सो नर सकल सदि्धता पावै ॥ 44 |
अन्त समय रघुबर पुर जाई । जहां जन्म हरि भक्त कहाई ॥ 45 |
श्री हरदिास कहै अरु गावै । सो बैकुण्ठ धाम को पावै ॥ 46 |

दोहा

सात दविस जो नेम कर, पाठ करे चति लाय ।
हरदिास हरि कृपा से, अवसि भक्ति को पाय ॥
राम चालीसा जो पढ़े, राम चरण चति लाय ।
जो इच्छा मन में करै, सकल सद्धि हो जाय ॥